अन्वेषण का स्वरूप

अ. : अपना पूरा जीवन हम कारणों की भाषा में चिंतन करते रहे, कारणों को प्रभावित करने में, उनका पता लगाने और उन्हें नियंत्रित करने में लगे रहे। लेकिन कारण को जानने पर भी तो हम उस संबंध में कुछ नहीं कर पाते। यह हमारे अनुभव का हिस्सा है। जबकि बुद्ध ने क्लेश के कारण को ढूंढ़ निकाला और क्लेश से मुक्त हो गए। अब, आप कहते हैं कि कारण ही परिणाम होता है और परिणाम ही कारण, तथा आप यह भी बताते हैं कि कारण और परिणाम में समय अपरिहार्य होता है। लेकिन आपको सुनने के बावजूद कारणों का दबाव तथा कारणों को प्रभावित करते रहना हमारे चिंतन का अभिन्न अंश बन गया है। क्या हम इस बारे में चर्चा करें?

कृ. : प्रश्न क्या है?

अ. : कारण-कार्य रूपी श्रृंखला की वैधता का समझ के संदर्भ में अन्वेषण करना।

कृ. : 'अन्वेषण करना' इसका क्या अर्थ है? जो अन्वेषण कर रहा है उस मन की क्या स्थिति है? आप कहते हैं कि कृत्य का कारण होता है तथा हर एक कारण कृत्य को प्रभावित करता है, और यह भी कि कारणों को समझे बिना तमाम कोशिशें कर लेने पर भी कृत्य सदैव सीमित रहेगा। इस प्रकार आप यह कह रहे हैं : कृत्य के कारण का अन्वेषण करें, इसे समझें और इस प्रकार से कृत्य में उत्परिवर्तन ले आएं।

मैं कृत्य के कारण को नहीं जानता। कुछ कारण तो जाहिर हो सकते हैं, और कुछ कारण ऐसे भी हो सकते हैं जिनका पता चेतन मन के माध्यम से नहीं लगाया जा सकता। सतही कारणों को तो मैं देख सकता हूं किन्तु इन सतही कारणों की भी बहुत गहरी जड़ें मनुष्य के अंतःकरण के गहनतर तलों में छिपी होती हैं।

अब क्या चेतन मन के लिए यह संभव है कि वह न सिर्फ उसका परीक्षण करे जो सतह पर है, बल्कि गहनतर को भी उद्घाटित कर सके? क्या चेतन मन के लिए यह संभव है कि वह कभी भी अधिक गहरे तलों का परीक्षण कर सके? जो मन अन्वेषण कर रहा है उस की स्थिति क्या है? ये तीन प्रश्न महत्त्वपूर्ण हैं। नहीं तो कारण की खोज बेमतलब है।

रा. : आप अन्वेषण तभी करते हैं जब आपको पता नहीं होता।

कृ. : हमने पहले यह प्रश्न पूछा : उस मन की क्या गुणवत्ता होती है, जो कि अन्वेषण कर रहा है? मैं अन्वेषण शुरू करूं, इससे पूर्व मेरे लिए उस मन की अवस्था जानना ज़रूरी है जो कि अन्वेषण करता है। आप कहते हैं बुद्ध ने ऐसा कहा, किसी और ने वैसा कहा, किन्तु मैं कहता हूं कि पहले आपको उस मन की गुणवत्ता का पता लगाना होगा जिसमें अन्वेषण करने का सामर्थ्य हो। अन्वेषण करने वाला 'मैं' क्या है? क्या यह कुटिल है, दूरदर्शी है या सिर्फ करीब ही देख पाता है? क्या आपके पास ऐसा मन है जो निष्कर्षों से मुक्त है? अन्यथा आप अन्वेषण नहीं कर सकते।

अ. : हमारे भीतर दबी-छिपी, कबूल न की गईं पूर्व-धारणाएं होती हैं - हम उन्हें देखते हैं व त्याग देते हैं।

कृ. : आप जो कुछ कर रहे हैं, वह सिर्फ क्रमिक विश्लेषण है। जब आप विश्लेषण करते हैं तो होता क्या है? विश्लेषणकर्ता होता है तथा वह वस्तु होती है,

जिसका विश्लेषण किया जा रहा है। विश्लेषण करने के लिए यह ज़रूरी है कि विश्लेषणकर्ता अत्यधिक साफ दृष्टि वाला हो। यदि उसका विश्लेषण त्रुटिपूर्ण है तो ऐसे विश्लेषण का रत्ती-भर भी मूल्य नहीं है। विश्लेषण की प्रक्रिया में समय निहित है। समय के माध्यम से जांच-पड़ताल करने पर कुछ तोड़ने-मरोड़ने वाले तत्त्व बीच में आ जाते हैं। विश्लेषण का तरीका पूरी तरह से त्रुटिपूर्ण है, विश्लेषण को तो छोड़ ही देने की ज़रूरत है।

ज. : मैं भ्रमित हूं।

कृ. : जी हां, यह तथ्य है कि हम भ्रमित हैं। हम नहीं जानते कि क्या करना है और विश्लेषण करना शुरू कर देते हैं।

अ. : हमें लगता है कि विश्लेषण कोई ठोस प्रक्रिया है। आपने कहा : जब आप कारण के संबंध में कुछ करने जाते हैं तो कुछ दूसरे तत्त्व भी बीच में आ जाते हैं। क्या इसका अर्थ यह है कि समस्या का विश्लेषण तर्क-विरुद्ध हो जाता है?

कृ. : मेरे ख्याल से यह सारी प्रक्रिया ही गलत है। मेरा संबंध उस कृत्य से है जो विश्लेषणात्मक परीक्षणों और विश्लेषण से पैदा हुए उलझावों की शृंखला का परिणाम होता है और जिसमें समय भी एक कारक है। जिसे मैं खोज रहा था, वह प्राप्त करने तक या तो मैं पूरी तरह से थक चुका या मर चुका होता हूं। चेतन मन की सहायता से मन के अप्रकट तलों का परीक्षण एवं विश्लेषण करना कठिन है। इसलिए मुझे महसूस होता है कि यह समूची बौद्धिक प्रक्रिया गलत है। मेरे इस कथन में असम्मान की भावना बिलकुल नहीं है।

अ. : हमारे पास परीक्षण करने हेतु जो एकमात्र उपकरण है, वह है बुद्धि। बुद्धि के पास समझने की, याद कर पाने की, पूर्वानुमान और विश्लेषण की क्षमता होती है। बुद्धि केवल एक अंश ही है। इसलिए किसी अंश द्वारा मन की जांच-परख किया जाना सिर्फ आंशिक समझ ही पैदा कर सकता है। इस बारे में हम क्या कर सकते हैं?

रा. : हम कुछ नहीं कर सकते।

कृ. : आप कहते हैं कि जांच-परख के लिए जो एकमात्र सक्षम साधन हमारे पास है वह बुद्धि है। क्या ऐसा है? क्या बुद्धि में परीक्षण की क्षमता है? और यदि है, तो भी क्या इसके द्वारा परीक्षण केवल आंशिक ही नहीं होता? मैं देख लेता हूं कि बुद्धि चूंकि आंशिक है, अतः इसके द्वारा की जा सकने वाली परीक्षा भी आंशिक ही होती है। मैं इस सत्य को देखता हूं - किसी निष्कर्ष या अभिमत के रूप में नहीं, बल्कि इसे मैं एक तथ्य के तौर पर देखता हूं। इसलिए, इसके बाद, मैं बुद्धि का प्रयोग नहीं करता।

अ. : ऐसा मन, संभव है कि विश्वास की शरण में चला जाए। आप कह रहे हैं कि मन को इसका बोध होता है। जब मन विश्लेषण से सतही तौर पर मुंह मोड़ लेता है, तो यह दूसरे धोखों का शिकार हो जाता है। इसलिए संयमित रहते हुए, बुद्धिपूर्वक ऐसा किया जाना चाहिए।

कृ. : विश्लेषण कोई तरीका नहीं है।

अ. : तो खोज हम किस उपकरण के माध्यम से करें ? आप जो कह रहे हैं उस के साथ हमारे तर्क की संगति तो बैठनी चाहिए।

ज. : आप किसी ऐसे रास्ते से वहां तक पहुंचते हैं जो विश्लेषणपरक नहीं है। हमें इसका तर्क दिखलाई देता है।

कृ. : मैं आप से कहता हूं कि विश्लेषण समझ का रास्ता नहीं है। विवेचना के माध्यम से आपके समक्ष मैं तर्कसंगत श्रेणियां प्रस्तुत करता हूं लेकिन वह सब तो व्याख्या मात्र है। आप इस सत्य को क्यों नहीं देख लेते कि विश्लेषण समझ का रास्ता नहीं होता?

अ. : आप जो कहते हैं, तर्कसंगत है।

कृ. : कोई आप को बताता है कि आपकी पद्धति मिथ्या है क्योंकि यह बुद्धि पर आधारित है, जो कि आंशिक है, तथा आंशिक परीक्षण तो परीक्षण होता ही नहीं। आपने इतना भर किया है कि तर्क का प्रयोग करते हुए किसी निष्कर्ष तक पहुंचे हैं। हम तर्क की बात नहीं कर रहे हैं। तर्क ही तो आपको विश्लेषण तक ले गया है।

अ. : यह विश्लेषण आंशिक है।

कृ. : जैसे कोई कहे : मैं अपनी पत्नी से आंशिक रूप से प्रेम करता हूं।

अ. : यहां हम उन्हीं उपकरणों का इस्तेमाल कर रहे हैं, जिनका विकास हमने बाहरी परिवेश को, प्रकृति को, समझने के लिए किया है। लेकिन इस क्षेत्र में वे अपर्याप्त हैं।

कृ. : वे पर्याप्त नहीं हैं। विश्लेषण की पद्धति समय से जुड़ी है। समय से जुड़ी होने के कारण यह आंशिक होगी। यह आंशिकता बुद्धि की उपज है, क्योंकि बुद्धि समग्र संरचना का एक अंश ही है।

अ. : जब आप प्रश्न करते हैं, तो वह कौन-सा उपकरण होता है, जो अन्वेषण कर रहा होता है? हम जब प्रश्न करते हैं तो हमें तो बुद्धि की ओर लौटना होता है।

कृ. : चर्चा की शुरुआत करते हुए आपने यह कहा कि बुद्धि ही परीक्षा करने का अकेला उपकरण है। मैं कहता हूं कि बुद्धि आंशिक होती है और इसलिए आपके द्वारा किया जाने वाला परीक्षण असंतुलित होगा। इस प्रकार आपका परीक्षण अप्रामाणिक ठहरता है।

अ. : यह तो बिलकुल स्पष्ट है कि बुद्धि अंशमात्र होती है तथा देख नहीं सकती, लेकिन यह आदत के जरिये काम करना शुरू कर देती है।

कृ. : मैंने कारण-कार्य पर, कार्य-कारण पर बोलते हुए चर्चा को प्रारंभ किया - वे विश्लेषण करने की पद्धतियां हैं। विश्लेषण में समय निहित है और इस प्रकार के विश्लेषण में विश्लेषणकर्ता तथा विश्लेषित, दोनों होते हैं। यह ज़रूरी है कि विश्लेषणकर्ता अतीत द्वारा एकत्रित तत्त्वों से मुक्त हो, अन्यथा वह विश्लेषण नहीं कर सकता। चूंकि वह अतीत से मुक्त नहीं हो सकता, इसलिए उसका विश्लेषण प्रामाणिक नहीं होगा। इसे देखते हुए मैं कहता हूं कि यह रास्ता तो बंद हो चुका। इसलिए अब मैं किसी और मार्ग की तलाश में हूं।

अ. : यह संक्षिप्ततम सारांश है : तर्क के माध्यम से तर्क को निरस्त कर दिया गया।

कृ. : मैं देखता हूं कि विश्लेषण वह मार्ग नहीं है। यह बोध, मन को एक मिथ्या प्रक्रिया से पूरी तरह छुटकारा दिला देता है। और इस प्रकार मन और अधिक जीवंत हो उठता है। ऐसा होता है जैसे कोई मनुष्य भारी बोझ लेकर चल रहा हो, और वह बोझ उतार दिया जाए।

अ. : किन्तु हम लोगों की स्थिति में बोझ लौट-लौट आता है।

कृ. : किसी वस्तु के सत्य का बोध होने पर मिथ्यात्व लौट कैसे सकता है? जैसे ही आप यह देख लेते हैं कि सांप जहरीला है, आप उसकी ओर लौटते नहीं।

अ. : नागार्जुन कहते हैं : मैं जो कहता हूं उसे यदि आप किसी अवधारणा के रूप में देखते हैं, तो आप अटक जाते हैं।

ज. : क्या कोई और रास्ता है?

अ. : आप कुछ कहते हैं। जैसे ही आप कुछ कहते हैं, वह उपकरण अपना कार्य बंद कर देता है क्योंकि वह उपकरण अब और कुछ नहीं कहने वाला है।

कृ. : किन्तु वह यंत्र बहुत बारीकी से काम करता है, एकदम स्पष्ट है, वह आंशिक कृत्य से परहेज करता है।

अ. : यदि यह सतत अवलोकन कर रहा है तो कार्यरत रह सकता है।

कृ. : जी नहीं सर, पूरी की पूरी विश्लेषणात्मक प्रक्रिया खत्म हो चुकी है।

अ. : जब हम इससे गुजर चुके होते हैं...

कृ. : नहीं, हम अन्वेषण नहीं कर रहे हैं। मैं आपको दिखा रहा हूं कि अन्वेषण कैसे करते हैं। आपने जो किया है, वह है मात्र बुद्धि का प्रयोग और जो कि एक आंशिक उपकरण है। और आप यह सोचने लगे कि वह संपूर्ण उत्तर है। देखिए, मन ने अपने-आपको किस तरह से धोखा दिया है, कैसे यह कहता है : मैंने इस सबका विश्लेषण कर लिया है। लेकिन इसने यह नहीं देखा है कि यह कितना आंशिक, कितना मूल्यहीन है। परीक्षण के साधन के रूप में बुद्धि स्वयं ही व्यर्थ बन गई है। मैं खुद से पूछता हूं : जब बुद्धि परीक्षण का साधन नहीं होती, तब क्या होता है?

अ. : कोई जब इस बिन्दु तक पहुंचता है तो उसे किसी सहारे की, मदद की, किसी अवलंबन की ज़रूरत महसूस होने लगती है।

कृ. : सच्चाई यह है कि बुद्धि एक अधूरा यंत्र है, और उस गति को नहीं समझ सकती जो कि संपूर्ण है। फिर अन्वेषण क्या है? यदि बुद्धि अन्वेषण नहीं कर सकती तो वह कौन-सा यंत्र है जो अन्वेषण कर सकता है? इस बारे में शंकर, नागार्जुन तथा बुद्ध क्या कहते हैं? क्या वे बुद्धि का निषेध करते हैं?

अ. : वे कहते हैं 'आधारभूत ज्ञान' से अन्वेषण करो।

कृ. : अर्थात आंशिक जीवंतता, आंशिक ऊर्जा द्वारा समग्र ऊर्जा का अन्वेषण। यह कैसे संभव है? उन्होंने ऐसा क्यों कहा?

रा. : वेदांत के मतानुसार आप बुद्धि द्वारा नहीं देख सकते, किन्तु आत्मा या आत्म-तत्त्व की सहायता से अवश्य देख सकते हैं, क्योंकि वह बोधस्वरूप ही है।

अ. : चूंकि हमारे मन गहराई से संस्कारित किए जा चुके होते हैं इसलिए कोई भी सहारा दिखाई देते ही उसे हम कसकर पकड़ लेते हैं।

कृ. : हम पाते हैं कि बुद्धि का मार्ग तथा विश्लेषण अन्वेषण हरगिज नहीं है। यह तो किसी सुरंग में थोड़ी दूर तक चलने जैसा है। यदि बुद्धि अन्वेषण का उपकरण नहीं हो, तो ऐसे मन की गुणवत्ता क्या होती है?

अ. : जब बुद्धि को एक ओर हटा दिया जाता है, तो मन में अतीत का कुछ नहीं रह जाता।

कृ. : वह कौन है जो इसे एक ओर हटाएगा? आप फिर द्वैत की प्रक्रिया में लौट आए!

अ. : हम यह देख लेते हैं कि बुद्धि आंशिक है।

कृ. : इसीलिए हम पूछते हैं : जो अन्वेषण कर सके, उस मन की, उस समूची मनोदैहिक जैव-प्रणाली की गुणवत्ता क्या होती है? जो मन यह देखता है कि प्रत्येक आंशिक गतिविधि अपूर्ण होती है और इसीलिए कहीं नहीं ले जाती, ऐसे मन की गुणवत्ता क्या होती है? वह यह देख पाता है कि आंशिक रूप से देखना दरअसल देखना है ही नहीं, और इसलिए वह ऐसा करना छोड़ देता है, वह मामला पूरी तरह खत्म हो जाता है। तब मन पूछता है : समग्रबोध का स्वरूप क्या है? और क्या केवल ऐसा समग्रबोध ही परीक्षण कर पाता है? और हो सकता है उसे किसी चीज के परीक्षण की ज़रूरत ही न पड़े, क्योंकि जिसका परीक्षण किया जाना है वह विभाजन, विश्लेषण तथा अन्वेषण के आंशिक क्षेत्र में ही है। मैं यह पूछ रहा हूं कि वह समग्रबोध क्या है? समग्रबोध की क्या गुणवत्ता होती है?

अ. : किसी भी प्रकार की गतिविधि समग्रबोध नहीं हो सकती।

कृ. : समग्रबोध क्या है?

रा. : ऐसा लगता है कि कोई उपकरण नहीं हैं क्योंकि उपकरण तो किसी-न-किसी से संबंधित होता है।

कृ. : मुश्किल क्या है? जब आप खिड़की से बाहर नजर डालते हैं और उन झाड़ियों को देखते हैं तो उन्हें किस तरह से देखते हैं? सामान्यतः आप तब कुछ-न-कुछ सोच रहे होते हैं, और साथ ही साथ देख भी लेते हैं। मैं कहता हूं कि आप को बस देखना है। सारी बात यही है। जब मैं किसी पेंटिंग को देखता हूं तो यह नहीं कहता कि चित्रकार ऐसा है या वैसा है, कि वह उस दूसरे चित्रकार से बेहतर है। मेरे पास पैमाना नहीं होता, मैं शब्दों का प्रयोग नहीं करता। अभी-अभी हमने कहा कि आंशिक रूप से देखना तो वस्तुतः देखना है ही नहीं। इसलिए मन ने आंशिकता से छुटकारा पा लिया। जब मैं देखता हूं, देखता भर हूं।

रा. : हममें आदत का तत्त्व प्रबल है।

कृ. : आदतों से बंधा मन अन्वेषण नहीं कर सकता। इसलिए हमें इस मन का परीक्षण करना होगा जो आदत में फंसा है, हमें आदत को समझना होगा। अन्वेषण, कारणत्व तथा विश्लेषण को भूल जाएं। पहले आदत के मसले को लें।

अ. : लेकिन आप जो कुछ भी बुद्धि के द्वारा कहते हैं, वह आंशिक होता है।

कृ. : इसके यथार्थ को देखें, तर्क को नहीं। तर्क आप बाद में भी दे सकते हैं। जिसे आप दरवाजा समझ रहे थे, वह दरवाजा नहीं है। एक बार यह देख लेने पर आप उस ओर नहीं जाएंगे। लेकिन आप देखते ही नहीं हैं।

रा. : बोध तथा पहचान में क्या फर्क होता है? हमारे लिए तो बोध पहचान के रूप में ही आकार लेता है।

कृ. : क्योंकि आप किसी चीज से जोड़कर पहचान स्थापित करते हैं, पहचान पिछली चीजों से जोड़कर देखने की आदत का एक हिस्सा भर है। और मैं यह कह रहा हूं कि आदत में जकड़े हुए मन की सहायता से आप परीक्षण व अन्वेषण नहीं कर सकते। इसलिए आदत की बनावट का पता लगाएं। फिलहाल अन्वेषण की फिक्र में न पड़ें।

अ. : आदतें तो खांचा हैं।

कृ. : आदतें कैसे बन जाती हैं? वह दरवाजा है, मैं उस दरवाजे से हो कर जा रहा हूं। अब, मन आदत से ग्रस्त क्यों हो जाया करता है? क्या इसीलिए कि कार्य करने का सबसे आसान तरीका वही है? क्या ऐसा इसलिए होता है क्योंकि आदत में संघर्ष नहीं है - मुझे इसके बारे में कुछ सोचना नहीं पड़ता? मैं छः बजे उठता हूं और नौ बजे सो जाता हूं।

अ. : मैं किसी पेड़ को देखता हूं। मैं उसके बारे में विचार नहीं करता, तो भी मन कहने लगता है कि यह एक पेड़ है।

कृ. : यह आदत है। मन आदत से इसलिए बंध जाता है क्योंकि वह जीने का सबसे आसान तरीका है, यांत्रिक ढंग से जीना सरल होता है। यौन-संबंधों में तथा दूसरे सभी मामलों में इस ढंग से जीना आसान होता है। तब मैं बिना प्रयत्न किए, बिना बदलाव लाए जिन्दगी जी सकता हूं, क्योंकि आदत में मुझे पूर्ण सुरक्षा महसूस होती है। आदत में परीक्षण नहीं करना पड़ता, खोजना नहीं पड़ता, प्रश्न नहीं पूछने होते।

रा. : मैं आदत के दायरे में ही पड़ा रहता हूं।

कृ. : अतः आदत एक छोटे से क्षेत्र के भीतर ही कार्य कर सकती है - उस प्रोफेसर की तरह जो अपने खास विषय में तो विशेषज्ञ होता है, लेकिन बहुत ही संकीर्ण दायरे में अपना कार्य करता है। उस भिक्षु की तरह जो अपने छोटे से एकान्त कक्ष में कार्यरत रहता है और एक तय ढंग से जीवन जीता है, उसका मन सुरक्षा की चाह में बिना किसी बदलाव के एक ढांचे में रहा चला जाता है। यह सब आंशिक परीक्षण है, यह मन को ढांचे से मुक्त नहीं करता। तब मैं करूं क्या?

अ. : आंशिक समझ वस्तुतः समझ होती ही नहीं,- यह देख लेने पर, जान लेने पर, मन स्वयं को आदत से मुक्त कैसे करता है?

कृ. : मैं आपको यह दिखाने जा रहा हूं।

अ. : हमने आदत की पड़ताल की, लेकिन मन इससे मुक्त नहीं हुआ।

कृ. : अब आप आदत के विश्लेषण की ओर कभी नहीं लौटेंगे, आप आदत के कारणों की जांच-परख नहीं करेंगे। इस तरह मन पर से विश्लेषण का बोझ हट जाता है, जो कि आदत का हिस्सा था। इस तरह आप इससे छुटकारा पा लेते हैं। आदत किसी बात का सूचक-लक्षण नहीं होती, - आदत मनोदैहिक होती है। जब हम इसका उसी रूप में परीक्षण कर लेते हैं जिस रूप में हममें यह है, तो यह समाप्त हो जाती है।

अ. : हम अभी भी आदत से मुक्त नहीं हुए हैं।

कृ. क्योंकि आपका अभी भी आग्रह है कि दरवाजा वहीं है। आपने ऐसा कहकर शुरुआत की थी : मैं जानता हूं। इसमें एक किस्म का दर्प है। आप ऐसा नहीं कहते : मैं पता लगाना चाहता हूं।

जब मन आदत से मुक्त हो जाता है तब समग्रबोध क्या होता है? आदत में निष्कर्ष, युक्तियां, मत, सिद्धांत अंतर्निहित हैं। आदत तो द्रष्टा का सार है।

रा. : 'मैं' के बारे में हम जितना भी जानते हैं, वह यही है।

कृ. : पता लगाने के लिए मैं पुस्तक की ओर मुड़ता हूं। और इसी बात ने नुकसान पहुंचाया है, ऐसी क्षति, जिसे अन्य लोगों ने प्रतिष्ठित किया है - शंकराचार्यों ने, बुद्ध आदि ने और बाकी सब ने। मैं अमुक गुरु को ज्यादा महत्त्वपूर्ण मानता हूं या मैं उस गुरु को वरीयता देता हूं, मैं इस बारे में बहस करता हूं, मैं मसले को यूं ही नहीं छोड़ता क्योंकि ये बातें मेरे दंभ से जुड़ी होती हैं। क्या आप उस कार्टून के बारे में जानते हैं जिसका शीर्षक-वाक्य इस प्रकार है : 'मेरे गुरु में आपके गुरु से अधिक संबोधि है!'

अतः सर, विनम्रता ज़रूरी है। मैं बिलकुल कुछ नहीं जानता। और मैं किसी भी बारे में ऐसा एक शब्द भी नहीं दोहराऊंगा जिसे मैंने खुद ही नहीं जाना है। मैं वास्तव में और कुछ नहीं जानना चाहता। बस इतना ही। जिसे मैं वास्तविक दरवाजा समझ बैठा था वह दरवाजा ही नहीं है। तब क्या होता है? मैं उस दिशा में एक कदम भी नहीं बढ़ाता। मैं अन्वेषण करता हूं।

मद्रास ७ जनवरी १९७१

ट्रेडिशन एंड रेवोलूशन

अनुवाद : विनय वैद्य, शक्ति कुमार